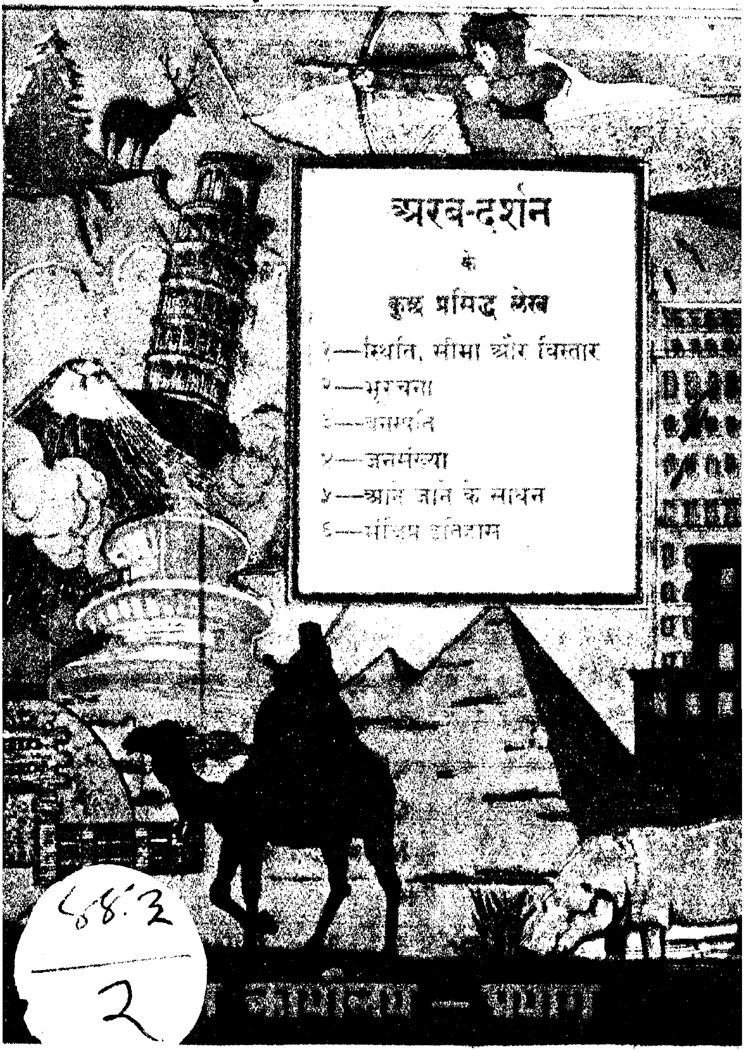
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५०



अरब-दर्शन

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

…ा कार्यालय — प्रयाग

नवम्बर, १९४३] **देश-दर्शन** [अगहन २०००

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ५] अरब-दर्शन { संख्या ६
पूर्ण संख्या ५०

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र बी०ए०

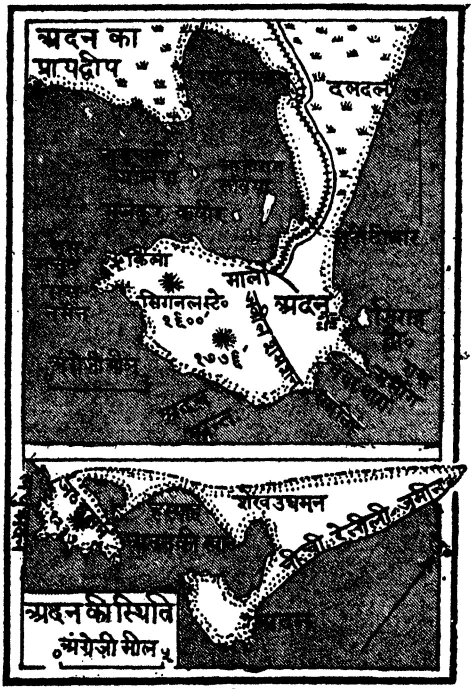
प्रकाशक

[illegible] कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-	वार्षिक मूल्य	४)
Foreign	Rs. 6/-	विदेश में	६)
This copy	As. -/6/-	इस प्रति का	।=)

विषय-सूची


अदन और पेरिम
०-१००
१००-४०००
४००० से ऊपर
ब्रिटिश राज्य
ब्रिटिश सुमाली लैण्ड


अदन का
प्रायद्वीप
दलदल
शेकिमा
मालो
सिगनल स्टे०
१६००'
१७७६'
अदन
शेख उथमन
अदन की स्थिति
अंग्रेज़ी मील

स्थिति

स्थिति, सीमा और विस्तार

अरब दक्षिणी-पश्चिमी एशिया का एक विशाल प्रायः द्वीप है। यह अफ्रीका को एशिया से मिलाने वाली एक कड़ी है। यह १२ और ३२ उत्तरी अक्षांशों और ३५ और ६० पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। इसके पश्चिम में लाल सागर दक्षिण में अदन की खाड़ी और हिन्दमहासागर, पूर्व में ओमन और फारस (ईरान) की खाड़ियां हैं। उत्तर की ओर इराक और ट्रांसजार्डन के नये राज्य हैं। साइनाई प्रायः द्वीप पेलेस्टाइन, ट्रान्सजार्डन, सिरिया और इराक में अधिकांश अरबी जनसंख्या है। पर राजनैतिक दृष्टि से यह प्रदेश अरब से अलग हैं। अकाबा से अदन तक अरब की अधिक से अधिक लम्बाई १४०० मील और चौड़ाई ६०० मील है। इसका क्षेत्रफल १० लाख वर्ग मील है जो हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का प्रायः दो तिहाई है। लेकिन इसकी जनसंख्या केवल ५० लाख (संयुक्त प्रान्त की जनसंख्या की १/१० है) है जो इस प्रान्त के चार पांच ज़िलों की जनसंख्या के बराबर है। आकार में अरब का देश एक विषम चतुर्भुज के समान है।

सूचना

अरब देश एक विशाल पठार है। लालसागर से दस पन्द्रह मील पूर्व की ओर तंग तटीय मैदान है। इस तटीय मैदान की चौड़ाई कहीं भी ३० मील से अधिक नहीं है। इस तटीय मैदान के आगे पठार का ५००० फुट ऊँचा सपाट किनारा है। दक्षिण की ओर यमन में इस पठार की कोई कोई चोटियां दस हज़ार फुट ऊँची हैं। यहां यह पहाड़ सा मालूम होता है। पूर्व की ओर यह पठार क्रमशः ढालू हो गया है लेकिन पूर्व की ओर मध्यवर्ती भाग में चार पांच हज़ार फुट ऊँची एक पहाड़ी यमन से उत्तर की ओर चली गई है। इस पहाड़ी की कोई कोई चोटी ६००० फुट ऊँची है। इस पठार में सदा बहने वाली एक भी नदी नहीं है। नदियों के स्थान पर यहां छोटी छोटी असंख्य वादियां (घाटियां) हैं। कभी अचानक प्रबल वर्षा हो जाने से इनमें पानी बहने लगता है। लाल सागर की ओर जाने वाली घाटियों ने अपनी तली को गहरा काट दिया है। इन गहरी घाटियों ने लालसागर के तटीय मैदान में उत्तर से दक्षिण की ओर आने वाले मार्ग को दुर्गम बना दिया है। इनके क्षणिक पानी से सिंचाई नहीं हो सकती है।

नाव तो इनमें चल ही नहीं सकती। फारस की खाड़ी की ओर वाला पठार का ढाल अधिक लम्बा और क्रमशः है। इस ओर आने वाली नदियां (घाटियां) भी अधिक लम्बी हैं। लेकिन उनमें अधिकांश फारस की खाड़ी तक नहीं पहुँच पाती हैं। इन वादियों की तली पड़ोस की भूमि से कुछ ही नीची है। यात्री को प्रायः इनका पता भी नहीं लग पाता है। पश्चिमी वादियां यात्रा मार्ग में बाधा डालती हैं। पूर्व की ओर आने वाली वादियों से यात्रा में कुछ सहायता मिलती है। इन सूखी लम्बी, उथली वादियों में धरातल के ऊपर तो पानी नहीं रहता है लेकिन इनकी तली को खोदने से कुओं में पानी निकल आता है। जहां कुओं में साधारण गहराई पर पानी मिल जाता है वहीं ओसिस या मरुद्वीप नखलिस्तान है। इस ओर अरब में इस प्रकार की चौड़ी उथली और सूखी घाटियां प्रायः मिलती हैं। प्रायद्वीप के दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर ओमन की जबल अखदर पर्वत श्रेणी नव दस हज़ार फुट ऊँची है।

अरब देश कई प्राकृतिक भागों में बटा हुआ है। मर्याद या सिरिया का रेगिस्तान ३० उत्तरी अक्षांश के

आगे समस्त उत्तरी भाग को घेरे हुये है। पश्चिम में पेलेस्टाइन से लेकर पूर्व में मेसोपोटामिया के डेल्टा तक फैला हुआ है। इस विशाल रेगिस्तान का अधिकतर भाग पेलेस्टाइन, सिरिया और इराक में है। कुछ भाग अरब में है। पश्चिम में मोआब और दोम पर्वतों के एक ओर कुछ काला या धुँधला रेगिस्तान है। पूर्व की ओर वादी सिरहान की निचली घाटी और जबल द्रुज की शान्त ज्वालामुखी (आग्नेय) पहाड़ी है। इस उच्च भाग में एक कंकरीला मैदान पूर्व की ओर इराक तक चला गया है। इस मैदान को असंख्य वादियों ने काट दिया है। इनमें वादी हौरान प्रधान है। द्रुज प्रदेश के सिरे पर अजराक के चश्मे हैं जहां सदा पानी मिलता है। कफ इतहरा आदि नमकीन गांवों में होती हुई सिरहान की घाटी दक्षिण-पूर्व की ओर जाती है। यहां कुछ खजूर उगाया जाता है और नमक इकट्ठा करके सिरिया को भेज दिया जाता है। वादी सिरहान की ऊंचाई समुद्र-तल से १८५० फुट ऊंची है। ऐसा मालूम होता है कि पहले यहां स्थल से घिरा हुआ एक समुद्र था। इसकी तली से कुछ ही नीचे बहुत से स्थानों में नमकीन पानी

मिलता है। इस ओर ३००० हज़ार जन-संख्या वाले जौफ कस्बे के लोग खजूर उगाते हैं। सकाका खजूरों के बीच में कई छोटे छोटे गांवों का समूह है। जौफ में पुराना मध्य कालीन किला बना है। जौफ से कुछ दूर दक्षिण की ओर नफद का विशाल लहरदार लाल रेतीला रेगिस्तान आरम्भ होता है। इसके दक्षिण की ओर पूर्वी सिरे से रुब अल खाली का रेगिस्तान दक्षिणी अरब के बड़े भाग को घेरे हुये है। छोटे छोटे रेगिस्तान पश्चिम की ओर भी फैले हुये हैं। इस प्रकार नजद के मध्यवर्ती पर्वतीय प्रदेश के चारों ओर रेतीले रेगिस्तानों का घेरा है। इनकी बालू वास्तव में पथरीली चट्टानों के टूटने से बनी है। दिन के समय तेज़ गरमी पड़ती है। रात को कड़ा जाड़ा पड़ता है। इससे चट्टानें लगातार टूटती रहती हैं।

उत्तरी नफद पश्चिम से पूर्व की ओर ४०० मील तक फैला हुआ है। इसकी औसत चौड़ाई २०० मील है। यहां पानी का प्रायः अभाव है। जब शीतकाल में कभी पानी बरस जाता है तब यहां अच्छी घास उग आती है। तभी शीतकाल और बसन्त ऋतु में

बद्दू लोग अपने ऊंटों के झुंडों को यहां चराने के लिये ले आते हैं। यहां रेतीले टीले बहुत हैं। इनकी चौड़ाई कहीं कहीं दस-बारह मील है। ऊंट पर सवार होने पर भी इनको पार करने में तीन चार घंटे लग जाते हैं। दो रेतीले टीलों के बीच में सूखी वादी घिरी हुई मिलती है। वादी की तली कड़ी होती है। तली में बालू नहीं होती है। किनारों पर रेतीले टीले रहते हैं। किसी किसी वादी की चौड़ाई सवा मील और गहराई ३३० फुट होती है। घाटियां पूर्व-पश्चिम दिशा में जाती हैं। समुद्र तल से नफ़द की औसत उंचाई ३००० फुट है। इसमें प्रायः निकली हुई चट्टानें मिलती हैं। दहना की औसत चौड़ाई ३० मील और उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई ४०० मील है। इसमें बालू की सात पेटियां हैं। इनके बीच में उथली रेतीली वादियां हैं। वादियों की तली कहीं भी २ मील से अधिक चौड़ी नहीं है। दहना के उत्तरी भाग में लाल बालू के टीले दो तीन सौ फुट ऊंचे हैं। इनमें बनस्पति का नाम नहीं है। दक्षिण की ओर टीलों का अभाव है। वर्षा हो जाने पर शीतकाल और बसन्त ऋतु में बद्दू अपने ऊंट चराने यहां आते हैं।

अरब-दर्शन

रूब अल खाली का ठीक ठीक पता नहीं लगा है। यह कड़े कंकड़ों और चूने के पत्थर का विशाल रेगिस्तान है। इसके कुछ भाग में रेतीले टीले हैं। कई स्थानों पर दूर से इसके सिरों को देखने से पुराने खंडहर दिखाई दिये। इससे पता चला कि यहां पुराने समय में बस्तियां थीं। कहीं कहीं इसके गुप्त स्थानों में खारे पानी के चश्मे हैं जिनका पानी पीकर ऊंट ज़िन्दा रह सकते हैं। वहीं अल मुर्रा और दूसरे फिरके यहां के प्रसिद्ध उमनिया ऊंट पालते हैं। मनुष्य यहां ठहरने के समय पानी के स्थान पर ऊंटनी का दूध पीकर निर्वाह करते हैं। नजद के पश्चिमी भाग और हजाज़ के बीच में कई छोटे छोटे रेतीले रेगिस्तान हैं। अरक अल सुबई इनमें सर्व प्रसिद्ध है। यह मक्का और रियादह के मार्ग में पड़ता है। कड़ी भूमि का एक टुकड़ा नफद के उत्तरी सिरे को दक्षिणी सिरे से पृथक करता और नजद के लिये द्वार बनाता है।

नजद—रेतीले घेरे के भीतर नजद का मध्यवर्ती प्रान्त है। यहीं अरब जाति का जन्म स्थान है। पश्चिम से पूर्व की ओर इसमें तीन वादियाँ हैं। वादी रीमा

उत्तरी भाग में .खैबर दर्रा से निकलती है। कासिम जिले में रेतीले टीले इस वादी का मार्ग घेर लेते हैं। इसके आगे अल बातिन नाम से यह वादी जुबैर के पड़ोस तक चली गई है। वादी सिर्रा पश्चिमी नजद् के पहाड़ी प्रदेश से निकलती है। जबल तुवैक के पठार को पार करके यमामा के पास वादी हनीफा में मिल जाती है। यहां इसे अल सहबा कहते हैं। दहना को काट कर अलकतरे के पास फारस की खाड़ी में मिल जाती है। वादी दवासिर दक्षिण में है। यह असीर और यमन की वादियों को मिलाती है। अल हजला के पास इसमें बिशा और तथलिश की वादियां मिलती हैं। आगे चलकर रूब अल खाली में यह नष्ट हो जाती है। कभी कभी अचानक प्रबल वर्षा हो जाने पर इन वादियों में बाढ़ का पानी बहने लगता है। सिरा वादी की सहायक हनीफा वादी में प्रतिवर्ष कम से कम एक बार पानी बहता है। शेष वादियों में निश्चित रूप से वर्ष में एक बार भी पानी नहीं बहता है। नजद का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। यहां बालू के ऊपर जटिल शिलाओं का समूह है। इनमें दो समानान्तर पहाड़ियां

हैं। जबल अजा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक १०० मील लम्बी है। इसकी अधिक से अधिक ऊंचाई ४६०० फुट है। पूर्व की ओर जबल सल्मा कम ऊंची है। हईल कस्बा इबन रशीद वंश की राजधानी थी। दो पहाड़ियों से निकलने वाली घाटियों में कई ऐसे गांव हैं जहां खेती होती है। जबल शमार जिले का शेष भाग चरवाही के काम आता है। यहां शमार फिरके के अरबी लोग रहते हैं। इनमें अनैज़ा का कस्बा (१५०००) और नखलिस्तान सब से अधिक प्रसिद्ध है। बुरैदा कस्बे (२०,०००) के पड़ोस में खजूर के वृक्ष बहुत हैं। दक्षिण की ओर हनीफावादी के सिरे पर खर्ज का जिला है। इसकी पुरानी राजधानी यमाम बालू से घिर गई। नई राजधानी दिलम (५०००) है। इसके पड़ोस में कुछ चश्मे हैं जो सिंचाई के काम आते हैं। अधिक दक्षिण में तुवैक के मध्य में फरा की घाटी है। यहां हौता और हरीक की दो बस्तियां (१५०००) हैं। अफियज प्रान्त में उम अल जबल की सब से बड़ी झील है जहां पांच छः छोटे छोटे चश्मे पहले सिंचाई के बहुत काम आते थे। इनसे कुछ सिंचाई इस समय भी होती है।

अल हसा घेरने वाली बालू के पूर्वी और पश्चिमी पक्ष में कुछ चरने योग्य घास है। पूर्वी भाग का ढाल फारस की खाड़ी की ओर है। किनारे पर औसत से २५ मील चौड़ा तटीय मैदान है। यहीं कंकड़ पत्थर के प्रदेश में अल हसा का प्रसिद्ध जिला है। यहाँ ठंडे और गरम पानी के कई चश्मे हैं जो सिंचाई के काम आते हैं। यहीं अरब का खालस छुहारा संसार भर में सर्वोत्तम होता है। यहीं हुफूफ (३०,०००) और मुबर्रज (२०,०००) के दो बड़े कस्बे हैं। कुछ दूर दक्षिण की ओर जब्रीनका नखलिस्तान है। यहाँ से ५० मील पूर्व की ओर डकैर प्राचीन गर्रा है। खाड़ी के किनारे उत्तर की ओर कुवैत है। जुबैल, कतर और त्रुशियाल तटीय बन्दरगाह हैं।

हज़ाज और यमन उत्तर-पश्चिम और दक्षिण की ओर ऊँचे पहाड़ हैं। उत्तर की ओर तट के पास मिदियन श्रेणी है। भीतर की ओर ज्वालामुखी (आग्नेय) पर्वतों का जटिल समूह है। दक्षिण की ओर यमन में चूने के पत्थर के पहाड़ अधिक ऊँचे हैं। पूर्व की ओर मुड़ने पर हदरामौत और दूसरे प्रदेशों में इस पर्वत श्रेणी की ऊँचाई

बहुत कम रह जाती है। हर्रा प्रदेश में इसकी सबसे अधिक ऊंचाई (जबल अंज़) ७००० फुट है। यमन की चोटियां प्रायः १०,००० फुट से अधिक ऊंची हैं। दक्षिणी सिरे पर पहाड़ियों के बीच बीच में उपजाऊ वादियां हैं। यहां खेती भी होती है। यहीं मदीना का सबसे बड़ा नखलिस्तान और शहर है। यहीं यनबु अल नख्ल और तैफ के नखलिस्तान और मक्का शहर है। जिसकी जन-संख्या ७०,००० है। असीर और यमन के ऊंचे भाग और भी अधिक उपजाऊ हैं। यहाँ कहवा बहुत उगाया जाता है। हदरामौत की वादियों में खजूर उगते हैं और तम्बाकू की खेती होती है। अनुमान किया जाता है कि इन पर्वत श्रेणियों में खनिज सम्पत्ति भी बहुत है। मिदियान में पहले कुछ सोना निकाला जाता था। अनुमान किया जाता है कि दक्षिण की ओर असीर प्रान्त और समीपवर्ती फरसान द्वीपों में मिट्टी का तेल है पहाड़ी नमक कई स्थानों में मिलता है। यमन की राजधानी साना नगर में १५,००० मनुष्य रहते हैं। असीर की राजधानी इबह में केवल ५००० मनुष्य रहते हैं। पूर्व और कुछ दूर दक्षिण की ओर बाहरी सिरों पर

बालू के टीले हैं। लेकिन दक्षिण-पूर्व की ओर ओमन के विशाल पर्वत हैं। समुद्र-तल से इनकी ऊंचाई १०,००० फुट है। ओमन की खाड़ी के किनारे पर मस्कत नगर ओमन की राजधानी है। यह प्रदेश भी यमन के समान ही उपजाऊ है। पहाड़ों से घिरी हुई इसकी वादियों और समुद्र-तट के नखलिस्तानों में १० लाख मनुष्य रहते हैं। इस प्रदेश के जबल अख्दर (पर्वत) का ढाल दोनों ओर एक दम सपाट है।

भूगर्भ—अरब की भूगर्भ-रचना मिस्र के समान है। दानेदार पत्थर की चट्टानें सबसे पुरानी हैं। इनके बीच में दूसरी चट्टानों का मिश्रण है। इनके ऊपर पेट्रा के बलुआ पत्थर के परत बिछे हैं। हजाज़ रेलवे के मार्ग में इसी प्रकार की चट्टानों के दर्शन होते हैं। वादी सिरहान और इराक के समीप वाले भागों में नई चट्टानें हैं। नुबिया के बलुआ पत्थर और पुराने दानेदार पत्थर के ऊपर लावा की विशाल तहें फैलती रहीं। लावा की इन बड़ी तहों ने नीचे की मुलायम चट्टानों को घिसने से बचाया। लावा के समूह ऊँचे पठार और हर्रा की पहाड़ियों के रूप में खड़े हैं। यहां लावा नुकीली चोटियां और क्रेटर

बहुत हैं। मदीना के पास १२५६ ईस्वी में एक ज्वालामुखी पर्वत फूट निकला था। दक्षिणी अरब में तट के पास और ओमन में बिल्लौरी चट्टानों का फर्श है। यहां कई प्रकार के चूने के पत्थर हैं। अदन शहर एक शान्त ज्वालामुखी पर बसा हुआ है। बाबुल मन्दब की प्रणाली के पास आग्नेय चट्टानें हैं। अरब में नीचे की चट्टानों के मुड़ने का कार्य बड़ी मन्द गति से हुआ। फिर भी कई भागों में विशाल प्रस्तर-भ्रंश हो गये। अकाबा की खाड़ी प्रस्तर भ्रंश का एक नमूना है। लाल सागर एक ऐसे महान आखात में स्थित है जिसके दोनों ओर वाले किनारे प्रस्तर-भ्रंश होने से बने हैं। हासा में गरम पानी के चश्मे हैं। खरज और अफियाज में भीतरी स्रोत के फूटने से चश्मों में पानी आता है। जलवायु विषुवत रेखा के समीप स्थित होने और रेगिस्तान होने के कारण अरब संसार के गरम प्रदेशों में से एक है। लेकिन ऊंचा होने से यहां इराक और सिन्ध की अपेक्षा कम ताप-क्रम रहता है।

नजद का अधिक से अधिक औसत तापक्रम ११२ अंश से अधिक नहीं होता है। उत्तरी भाग में पाला भी

पड़ता है। एक बार हैता का तापक्रम १८ अंश फारेन हाइट रह गया। रेगिस्तान के मध्यवर्ती प्रदेश की जलवायु हवा के खुश्क रहने के कारण स्वास्थ्यप्रद होती है। नजद् में उत्तर से चलने वाली नसीम हवा और भी अधिक लाभदायक होती है। फारस की खाड़ी और लालसागर के तट के पास हवा नम रहती है। लेकिन तापक्रम ६० या १०० अंश से अधिक नहीं होता है। अरब के ऊंचे पठार पश्चिमी अरब की पर्वत श्रेणी और अमन के प्रधान स्थल की जलवायु बड़ी सुन्दर है। यहां का तापक्रम अधिक विषम नहीं होता है। लेकिन मिदियन जिले में शीतकाल में पूर्वीय ठंडी हवा चलने पर बरफ भी गिर जाती है। यमन कुछ मानसूनी हवाओं के मार्ग में स्थित है। यहां ग्रीष्म काल में १६ इञ्च तक वर्षा हो जाती है। ओमन और अदन के पास भी कुछ (३ इञ्च) वर्षा हो जाती है। फिर भी अरब देश में जल वर्षा या हिम वर्षा अत्यन्त कम और अनिश्चित होती है। लालसागर के पास शीत काल में तीन इंच से अधिक नहीं होती है। लेकिन यह पानी वहीं बड़े जोर से बरसता है। प्रायः द्वीप के मध्य और पूर्वीय भाग में भी

शीतकाल में कुछ वर्षा होती है। मध्यभाग और पश्चिमी भाग में ग्रीष्म काल में भी कभी कभी पानी बरस जाता है। पश्चिमी और दक्षिणी विशाल प्रदेश अधिक खुश्क हैं। यहां अधिक समय तक वर्षा नहीं होती है। फिर भी रेगिस्तान के बड़े भाग में इतनी नमी हो जाती है कि वसन्त ऋतु में यह फूलने लगता है। वादियों के नखलिस्तानों में कुछ खेती भी हो जाती है। हजाज़ के पहाड़ी भाग कुछ अधिक अच्छे हैं। तैंफ मानसूनी वर्षा के लिये उत्तरी चरम सीमा है। अरब के उत्तरी भाग की हवायें पूर्व या पश्चिम दिशा से चलती हैं। पश्चिम की ओर से आनेवाली हवायें पेलेस्टाइन के पहाड़ों को पार करके भूमध्यसागर की ओर से कुछ वर्षा भी ले आती हैं। अरब के शेष भागों में हवायें उत्तर या दक्षिण की ओर से चलती हैं। दक्षिण की ओर से आने वाली हवायें शीतकाल में कुछ वर्षा और ग्रीष्म काल में गरमी लाती हैं। यमन के मैदानी भाग में खुश्क ऋतु में कुहरा पड़ता है। शेष भागों में ओस पड़ती है।

वनस्पति

अरब के नखलिस्तानों में बालू को रोकने के लिये एक प्रकार को इथील झाऊ लगाई जाती है। यहीं छुहारे और खजूर के बगीचे बड़े काम के होते हैं। कहीं कहीं अंगूर, अंजीर और अनार के पेड़ भी लगाये जाते हैं। ऊँचे भागों में पर्याप्त नमी होने पर सेब के पेड़ उगते हैं। उपजाऊ भागों में सिंचाई हो जाने पर गेहूँ जौ और धुर्रा (ज्वार) को खेती होती है। और भागों में तरबूज़, ककड़ी, मूली, प्याज और लौका भी होता है। तैफ और दूसरे ऊँचे भागों में गुलाब होता है। इससे इत्र बनाया जाता है। छठी शताब्दी में एबीसीनिया से अरब में कहवा लाया गया। कहवा यमन और असीर में समुद्र की ओर वाले ढालों पर ४००० से ७००० फुट की उंचाई तक होता है। जबल हराज़ कहवे का प्रधान केन्द्र है। कड़ी धूप से बचाने के लिये अंजीर के पेड़ लगा देते हैं। पहले कहवा के बीज बो दिये जाते हैं। डेढ़ दो गज़ की दूरी पर पंक्तियों में लगा देते हैं। पौधों को महीने में दो बार सींचा जाता है। दो तीन वर्ष के बाद यह फल देने लगते हैं। कहवा के दानों को सुखा कर अदन और

होदैदा को पहुंचा देते हैं। वहाँ से यह विदेशों को भेजा जाता है। यमन और दक्षिणी नजद में कहवा के छिलकों से भी किशीर (एक प्रकार का शरबत) तयार किया जाता है। कत या कत मुबारक पौधे से भी एक प्रकार की शराब बनाई जाती है। हद्रा मौत में तम्बाकू उगाई जाती है। लोबान और दूसरी तरह के गोंद रेगिस्तान की झाड़ियों से इकट्ठे किये जाते हैं। इनको इकट्ठा करने का प्रधान केन्द्र मक्का है। नफद और कड़े रेगिस्तान (जहाँ भूमि कड़ी है) में कई प्रकार के जंगली पौधे मिलते हैं। फिर भी समस्त देश को ध्यान में रखते हुये वनस्पति बहुत ही कम है।

बनस्पति की कमी होने के कारण जंगली पशु भी यहां बहुत कम हैं। कहीं कहीं भूरे हिरणों के झुंड मिलते हैं। यह हिरण बहुत तेज़ छलांगते हैं। लाल सागर की ओर वाले प्रदेश में हिरण कुछ अधिक हैं। यमन और हजाज़ में बन्दर भी पाये जाते हैं। खरगोश, लोमड़ी और भेड़िया कई भागों में मिलते हैं। पहाड़ी भागों में बनविलाव पाया जाता है। चिड़ियों में सब से बड़ा शुतुर्मुर्ग है और रेगिस्तान के कुछ भागों में पाया जाता है।

टिड्डी के दल फसल को प्रायः नष्ट कर जाते हैं। पर बद्दू लोग इन टिड्डियों को मारकर बड़े चाव से खाते हैं। पहाड़ी भागों में शहद की मक्खियां बहुत हैं। पालतू पशुओं में ऊँट, गधा, घोड़ा, भेड़, बकरी प्रधान हैं। कहीं कहीं गाय भी पाली जाती है। अरबी ऊंट बड़ा शानदार होता है। उसके एक कूबड़ होता है। अरबी घोड़ा भी प्रसिद्ध हैं। पर ऊंट यहां के बड़े काम का होता है।

जन-संख्या

अरब देश में लगभग ७० लाख मनुष्य रहते हैं। यमन और असीर में ३० लाख, हजाज़ में १० लाख, ओमन और हदरा मौत में १० लाख, नजद, हासा और रेगिस्तान में २० लाख मनुष्य रहते हैं। कहते हैं अरब जाति का जन्म स्थान यमन और कब्रिस्तान इराक़ में हैं। अरबी लोग कई फिरकों में बटे हुये हैं। क़हतान के लोग शुद्ध अरबी माने जाते हैं। अधिक तर फिरकों में इधर उधर का मिश्रण है। कहीं अरबी लोगों के साथ साथ हबशियों की भी बस्तियां

हैं। कुछ यहूदी भी यहां रहते हैं। कुछ सुलूबा के ईसाई नट रहते हैं। जिन्हें अरबी लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं। हज़रत मुहम्मद ने हज (तीर्थ यात्रा) करना मुसलमानों के लिये एक आवश्यक कार्य बतलाया है। इसलिये मक्का मदीना और जद्दा में संसार की कई जातियों के मुसलमान आ गये हैं। अरब के बन्दरगाहों में अधिकतर ईरानी, बलूची और हिन्दुस्तानी रहते हैं। शहरी लोगों की अपेक्षा बद्दू लोग अधिक शुद्ध अरबी माने जाते हैं। बद्दू लोगों में ऊँट और घोड़े पालने वाले ऊँचे वंशज के माने जाते हैं। भेड़ बकरी पालने वाले नीच गिने जाते हैं। अरब के शाही वंश के लोग अनज़ा फिरके के हैं। हज़ाज़ और नजद का राजा इब्नसऊद इसी वंश का है। साना के इमामों का दावा है कि वे हज़रत मुहम्मद की सन्तान हैं। इसी हैसियत से वे यमन पर राज्य करते हैं।

आने जाने के साधन

बीसवीं सदी के आरम्भ में दमश्क से माना होकर मदीना तक हजाज़ रेलवे बनी। मदीना से मक्का तक रेल बनाने के लिये पैमायश हुई। अदन और कुछ स्थानों में हवाई जहाज़ भी हैं। यहीं बेतार के तार के स्टेशन हैं। वहवी शासन काल में मोटरों की अधिक वृद्धि हुई। फिर भी अरब देश के अधिकतर भाग में आने जाने और माल ढोने का काम ऊँटों से लिया जाता है। जद्दा के बन्दरगाह में प्रायः प्रतिवर्ष जावा, सिंगापुर और भारतवर्ष से हाजी मुसलमान यात्रियों से लदे हुये जहाज़ आया करते हैं।

अदन, होदैदा और मोचा से क़हवा बाहर भेजा जाता है। चमड़ा, ऊन, घी भेड़, छुहारा, गोंद बाहर भेजा जाता है। फिर भी अरब का निर्यातआयात की अपेक्षा मूल्य में बहुत कम रहता है। यह कमी यहां हज के लिये आने वाले यात्रियों की कृपा से पूरी हो जाती है।

संक्षिप्त इतिहास

अरब का देश दो सभ्य (मिस्र और मेसोपोटामिया) देशों के बीच में स्थित है। इन दोनों की सभ्यता का कुछ असर अरब पर भी पड़ा। अरब में कुछ ऐसे सिक्के और खुदे हुये लेख मिले हैं जिनसे ईसा से १००० वर्ष पूर्व की सभ्यता का पता चलता है उस समय यहां मईन, सबा, हदरामौत और कतब के चार प्राचीन राज्य थे। सबा राज्य के सम्बन्ध में ईसा से ६०० वर्ष पूर्व का पता चला है। सबा या शेबा की रानी ने ईसा से ६५० वर्ष पूर्व सम्राट सुलेमान से भेंट की थी। ईसा से पूर्व ६०० और ६०० वर्ष के बीच में मक्रोब वंश के पुजारी राजा राज्य करते थे। इनकी प्रथम राजधानी सिरवा थी। ईसा से ५५० पूर्व से सबा के राजाओं का राज्य आरम्भ हुआ। इनकी राजधानी मारिब थी। ईसा से ११५ वर्ष पूर्व तक इनका राज्य रहा। इसके बाद इस वंश के राजा हदरामौत और कतबनू के राजाओं से लगातार लड़ते रहे। इस समय दक्षिणी अरब समृद्धिशाली हो गया था। इसका कारण यह था कि मिस्र और भारतवर्ष के बीच का व्यापार समुद्री मार्ग से

दक्षिणी अरब होकर जाता था। आगे चलकर जब यूनानियों ने सिकन्दरिया को बसाया तब मिस्र और भारत का व्यापार उत्तरीय स्थल मार्ग से होने लगा। इससे दक्षिणीय अरब का जल मार्ग वाला व्यापार बन्द हो गया। ईसा से ११५ वर्ष कतबनू राज्य का अन्त हो गया। इसी समय रोमन लोगों ने एक बार उत्तरी अरब में हस्तक्षेप किया लेकिन पथ प्रदर्शकों ने धोखा दिया। इससे रोमन सेना रेगिस्तान में नष्ट हो गई। कुछ समय बाद एबीसीनियन लोग (जो अरब से जाकर सामने वाले किनारे पर अफ्रीका में बस गये थे और ईसाई हो गये थे) अरब पर आक्रमण करने लगे। दक्षिणी अरब और एबीसीनियम लोगों की लड़ाई वास्तव में यहूदी और ईसाई मत की लड़ाई थी। दक्षिणी अरब के लोग इस समय यहूदी थे। रोमन लोगों ने स्वधर्मी एबीसीनियन लोगों का साथ दिया। ५२५ ईस्वी में इन्हें सफलता मिली। अरबों ने पारसियों से सहायता मांगी। ५७५ ईस्वी में अरब के इस भाग पर फारस के राजाओं का राज्य हो गया। वे यमन के सूबेदार नियुक्त करने लगे।

अरब-दर्शन

यूफ्रेटीज़ और अरबी रेगिस्तान के बीच में हीरा का राज्य स्थापित हुआ। इन की राजधानी हीरा थी जो कूफा से कुछ दूर दक्षिण की ओर था। यहां तीन प्रकार के लोग थे। (१) तनुख लोग तम्बुओं (डेरों) में रहते थे। यह तेहमा और नजद के अरबी थे। तीसरी शताब्दी में यह लोग हीरा में आये थे। (२) इबाद हीरा शहर में घर बनाकर बस गये थे। यह लोग ईसाई थे। इनकी धार्मिक भाषा सिरिक थी। व्यवहार की भाषा अरबी थी। (३) कुछ लोग भिन्न भिन्न फिरकों के थे जिन्होंने यहां आकर शरण ली थी।

छठी शताब्दी के आरम्भ में जफनीद वंश के लोग अरब के उत्तरी-पश्चिमी भाग में आये। इनके कुछ साथी यर्थरिब (मदीना) में बस गये। इससे कुछ पहले मध्य अरब में किन्दा बंश के लोग प्रबल हो गये।

इतना होते हुये भी छठी शताब्दी में अरब देश में अराजकता फैली हुई थी। बहरिन में बना बकर और बना अब्द कैस रहते थे। यहां ईरानियों का प्रभाव था। एक ईरानी सूबेदार यहां के प्रधान नगर हजार में रहता था। ओमन में मछली मारने वाले अज़दो

अरबी रहते थे जो ईरानियों से हिल मिल गये थे। अरब के पश्चिमी तट पर यमन के राजाओं का प्रभाव था। हज़ाज के नगर और भिन्न भिन्न फिरके स्वाधीन थे। कुछ भागों में घुमक्कड़ अरबी रहते थे। कुछ अरबी फिलस्तीन से आकर यहां बस गये थे कुछ अरबी लोग ही यहूदी बन गये थे।

इसी अराजकता और भेद भाव के समय में अरब देश में हजरत मुहम्मद का जन्म हुआ। हजरत मुहम्मद ने यहां इस्लाम धर्म का प्रचार किया। धार्मिक जोश बढ़ने के साथ साथ अरब में एकता बढ़ी। मुहजरीन (शरणागत) और अन्सार (सहायक और रक्षक) लोगों का दल जोर पकड़ गया। इन्होंने हजरत मुहम्मद को अपना धार्मिक नेता मान लिया। विद्रोहियों को दबाने की आवश्यकता थी। उनसे लड़ते लड़ते यह दल सैनिक बन गया। कई बार विजय प्राप्त हो जाने पर बहुत से लोग इस दल के सदस्य होने लगे। सदस्य बनने के पूर्व उनको इस्लाम धर्म स्वीकार करना पड़ता था। ६३० में मक्का पर अधिकार कर लिया गया। इस विजय से अरब के लोग अधिकाधिक संख्या में

मुसलमान होने लगे। ६३२ में जब हजरत मुहम्मद का देहान्त हुआ तब अरब देश प्रायः एक हो चुका था मक्का इस धर्म का प्रधान केन्द्र स्थान बन गया था। अबूबकर प्रथम खलीफा हुआ। उसने ६३२ से ६३४ तक शासन किया। प्रथम वर्ष उसने विद्रोहियों को दबाने में बिताया। दूसरे वर्ष उसने उत्तर में रोमन और पूर्व में इरानियों से लड़ने के लिये सेनायें भेजीं। ओमर दूसरा खलीफा था। उसने ६३४ से ६४४ तक शासन किया। केदसिया की लड़ाई में ईरानियों की हार हुई इराक पर अरबी का पूर्ण अधिकार हो गया। ६३५ में बसरा और कूफा के नये नगर बसाये गये। इसी वर्ष दमश्क पर अरबी लोगों का अधिकार हो गया। ६३६ में उन्होंने यरूशलम जीत लिया। ६३९ में मुवय्या सिरिया (शाम) का सूबेदार नियुक्त हुआ। ६४० में मिस्र पर आक्रमण किया गया। ६४१ में अरबों ने सिकन्दरिया पर अधिकार कर लिया। इसी वर्ष उन्होंने फोस्ताल कहरा की नींव डाली। ६४१ में नहवन्द की लड़ाई में ईरानी बुरी तरह हारे। ६४३ में अरबी लोगों ने राय पर अधिकार कर लिया इससे समस्त ईरान देश उनके हाथ

में आ गया। तीसरे खलीफा उस्मान ने ६४४ से ६५६ तक राज्य किया। इस बीच में बाहरी विजय जारी रही। मुसलमानी सेनाओं ने उत्तर में आर्मेनिया और लघु एशिया को जीत लिया। पश्चिम की ओर अफ्रीका के उत्तरी तट पर उनका राज्य कार्थेज तक फैल गया। अरबों ने जहाजी शक्ति भी बढ़ा ली थी। लेकिन अरब में गृह-कलह का आरम्भ हो चला था। उस्मान की हत्या हो जाने पर हजरत अली (६५६ से ६६१ तक) खलीफा हुये। लेकिन सिरिया के सूबेदार मुवैय्या ने विद्रोह का झंडा उठाया। ६५७ में सिफीन की लड़ाई में ओमैया विजयी हुआ। ६५८ में अली को गद्दी से उतारा गया। ओमैय्या का वंश राज्य करने लगा। दमश्क में खलीफा की राजधानी बनी। इससे पहले खलीफाओं ने अरब देश को एकता के सूत्र में बँधा रखने के लिये अरबी गुलामों को मुक्त कर दिया। अरब देश से ईसाई और यहूदियों को निकाल दिया। अरबी लोगों को विदेशों में बसने से मना कर दिया। जो धन विदेशों की लूट मार और कर से आता था वह मदीना में मुसलमानों में बांट दिया जाता था।

आगे चलकर कुरेशी लोग कूफा में बस गये। उत्तरी भाग में ओमय्या का वंश प्रबल हो गया। दक्षिणी अरब में अली ने यमन में अपना सूबेदार नियुक्त किया। अली के मरने पर उसके बेटे हसन और हुसेन उसके उत्तराधिकारी हुये। हसन ने मुवैया से सन्धि कर ली। हुसेन ने नये खलीफा यज़ीद को सिर न झुकाया और सेना एकत्रित करके युद्ध के लिये तयारी की। ६८० में करबला की लड़ाई में हुसेन मारा गया। यज़ीद की सेनाओं ने पहले ६८२ में मदीना को लूटा फिर ६८३ में मक्का पर घेरा डाला। सेना ने काबा नष्ट कर दिया। इसी बीच में यज़ीद मर गया। हुसेन का उत्तराधिकारी अब्दुल्ला मक्का में अरब का खलीफा बना रहा। उसने मिस्र और सिरिया का कुछ भाग ले लिया। लेकिन ६९२ में मक्का का घेरा फिर डाला गया। इसमें अब्दुल्ला के शत्रु विजयी हुये और वह मारा गया। इसके बाद अरब का प्रभुत्व जाता रहा। अरब खलीफा का एक प्रान्त बन गया। अब्बासी खलीफाओं ने राजधानी दमश्क से बदल कर कूफा में बनाई। कुछ समय अनवर में राजधानी रही। ७६० में

बगदाद शहर में राजधानी बनी। इन परिवर्तनों से अरब का ह्रास होता गया। अब्बासी खलीफाओं ने ईरानियों और तुर्कों को सेना और शासन विभाग में में बड़े बड़े पद दिये। केवल अरबी भाषा के प्रयोग में अरब की विजय बनी रही। इस भाषा का अध्ययन सभी मुसलमान करते रहे। अरबी लोगों से सैनिक वीरता का लोप होने लगा। उनमें फूट फैलने लगी।

नवीं शताब्दी के अन्त में (८८० ई०) में यमन (अरब) में हमदान क़रमात के अनुयाई बढ़ने लगे। ९०० ईस्वी में उनके एक सूबेदार ने कतीफ पर अधिकार कर लिया। यहां बहुत से यहूदी और ईरानी रहते थे। ९०३ में हजार (वेहरिन की राजधानी) पर अधिकार हो गया। भीतरी भागों में रहने वाले बद्दू अरबों ने कोई विरोध नहीं किया। यहां से उन्होंने ओमन पर चढ़ाई की। ९०६ में बगदाद के दरबार को पता लगा कि इस नये सम्प्रदाय के अनुयाइयों ने समूचे यमन पर अधिकार कर लिया और मक्का मदीना को घेर लिया। ९१६ ईस्वी में अबू सईद लहस के महल में मार डाला गया। ९२६ में लहस की किलेबन्दी

की गई। यहीं कर्मेथियन लोगों ने बहरिन की राजधानी बनाई। ९२९ में मक्का पर फिर आक्रमण हुआ। यहां का पाक काला पत्थर बहरिन पहुँचा दिया गया। इससे मुसलमान दंग रह गये। ९३९ में यह पत्थर मक्का में फिर रख दिया गया और कर देने वालों को हज करने की आज्ञा मिल गई। ९६९ में यह लोग मिस्र से लड़ बैठे। इससे उनका प्रभुत्व घटने लगा। ९८५ ई० में इराक में उनकी हार हुई। इससे यात्रियों से कर लेने का अधिकार छिन गया। ओमन स्वाधीन हो गया। तीन वर्ष बाद एक बद्दू शेख ने उनके प्रधान शहर कतीफ को ले लिया। इसके बाद अरब में उनका राजनैतिक महत्व जाता रहा। बद्दू लोग प्रबल हो गये। अरब में फिर गड़बड़ी मच गई। छोटे छोटे फिरके आपस में लड़ने लगे। कुछ सदियों तक अरब में फिर अंधकार छा गया। मक्का और मदीना के शरीफ भी आपस में लड़ते थे। वे कभी मिस्र और कभी बगदाद के खलीफा की आधीनता स्वीकार करते थे। बगदाद के पतन के बाद मिस्र का एक सूबेदार मक्का मदीना पर शासन करने लगा। इन दो शहरों के बाहर अराज-

कता छाई हुई थी। बद्दू अरब यात्रियों को लूट लेते थे। १५१७ ईस्वी में उस्मानी तुर्कों ने मिस्र को जीत लिया। अतः तुर्की का सुल्तान सलीम खलीफा बना। मक्का के शरीफ ने उसे शहर की कुंजियां भेंट कीं। उसे इस्लाम का नेता और हजाज़ का शासक माना। इसी समय यमन पर भी तुर्कों का अधिकार हो गया। १६३० में यमन के एक सरदार ने तुर्कों को भगा दिया। १८७१ तक यमन स्वाधीन रहा। १००० ईस्वी में खलीफा के चंगुल से मुक्त होकर ओमन स्वाधीन हो गया। अल अज़द फिरके के पांच चुने हुये इमाम ओमन का शासन करते थे। वे निज़वा में रहते थे। ११५४ से १४०६ तक यहां बनी नबहान (मालिक) राजा रहे। इस बीच में ईरानियों ने यहां दो बार आक्रमण किया। हुर्मुज़ के राजा सोलहवीं सदी के आरम्भ तक तटीय प्रदेश पर आक्रमण करते रहे। १४३५ में बनी नबहान के विरुद्ध लोगों ने विद्रोह किया और अल अज़द लोगों को फिर इमाम बनाया। १५०८ में पुर्तगालियों में अल्बकर्क की अध्यक्षता में ओमन का अधिकांश तट छीन लिया। १६२४ ई० में भीतरी प्रदेश

में यारूबा फिर के लोग प्रबल हो गये। उनके इमामों ने रुस्तक में अपनी राजधानी बनाई। पुर्तगालियों को कई नगर छोड़ देने पड़े। मस्तक में रहने के लिये उन्हें कर देना पड़ा। १६५१ में पूर्तगाली लोग मस्कत से भी भगा दिये गये।

वहवी आन्दोलन अठारहवीं शताब्दी के मध्य से आरम्भ हुआ। इस समय अरब कई छोटे छोटे स्वाधीन राज्यों में बटा हुआ था। यह प्रायः आपस में लड़ते थे। १७५० में मुहम्मद इब्न अब्दुल वहाब ने इस कट्टर सम्प्रदाय का आरम्भ किया। वह अयाइना में पैदा हुआ था। उसने बसरा और दमश्क में शिक्षा प्राप्त की थी। उसने मक्का की तीर्थ यात्रा भी की थी। इससे इस्लाम धर्म के मानने वालों की कमज़ोरियां उसकी समझ में आ गईं। उसने इस धर्म को सुधारने का दृढ़ निश्चय किया। वह रसूल के बताये हुये शुद्ध धर्म का समर्थक था। दरिया के महम्मद इब्न सऊद ने उसका साथ दिया। १७६५ में सऊद मर गया। लेकिन कट्टर बद्दू अरबी लोग उसके झंडे के नीचे आ गये थे। मध्य और पूर्वीय अरब पर उसका अधिकार हो गया था। उसके

बेटे अब्दुल अज़ीज़ ने नजद की सीमा से बहुत आगे अपना राज्य बढ़ा लिया था। १७८० के बाद वह यात्रियों पर आक्रमण करने लगा। इससे तुर्की का सुल्तान रुष्ट हो गया। १७६८ में एक तुर्की सेना ने हसा पर चढ़ाई की इस सेना को लौटना पड़ा। १८०१ में वहबी लोगों ने शिया लोगों के तीर्थ स्थान करबला को लूटा और छीन लिया। १८०२ में उन्होंने मक्का पर अधिकार कर लिया। इन्होंने मकबरों और पूजा स्थानों को नष्ट किया और खज़ाना लूट लिया। १८०२ के अक्तूबर मास में एक धर्मान्ध शिया ने अब्दुल अज़ीज़ को मस्जिद में मार डाला। १८०४ में उसके बेटे सऊद ने मदीना शहर ले लिया। इस प्रकार वहबी राज्य पूर्व में ओमन और पश्चिम में यमन तक फैल गया। १८११ में सऊद ने बग़दाद पर चढ़ाई की। इसी समय तुर्की सुल्तान ने अपने १६ वर्ष के बेटे को सेनापति बनाकर १०,००० सिपाही हजाज़ के तट पर भेजे। वहबी नेता पश्चिम को लोटा। उसने तुमून को हटा दिया लेकिन १८१२ में मक्का और मदीना पर मिस्री सेनाओं ने अधिकार कर लिया। १८१४ में तईफ के पास तमून की

फिर हार हुई। लेकिन इसी वर्ष सऊद मर गया। उसके बेटे अब्दुल्ला ने सन्धि कर ली। पर उसने सन्धि की कुछ शर्तों को पूरा न किया। इससे १८१६ में तुर्कों की मिस्री सेना ने अब्दुल्ला पर फिर चढ़ाई की। मिस्री सेना ने रास को छोड़ कर अनैजा और बुरैदा पर अधिकार कर लिया। अजैबा और बनी खालिद फिरकों ने तुर्कों का साथ दिया। १८१८ में शकरा पर तुर्कों का अधिकार हो गया। इसके बाद तुर्कों ने अब्दुल्ला की राजधानी दरिया को छीन कर बिस्मार कर दिया। अब्दुल्ला को पकड़ कर वे कुस्तुन्तुनिया को ले गये। वहां उसका सिर काट लिया गया। नजद के कई नगरों में मिस्री सेना रख दी गई। वहबी साम्राज्य का अन्त हो गया। १८२४ में अब्दुल्ला के बेटे ने मिस्र की आधीनता स्वीकार कर ली और कर देने लगा। रियादह में उसने राजधानी बनाई। १८३४ में उसके भतीजे ने उसे मार डाला। १८३६ में उसका बेटा फैसल अमीर हुआ। फैसल ने कर देना बन्द कर दिया। मिस्री सेना उसे पकड़ कर कहरा को ले गई। खालिद अमीर बनाया गया। १८४२ में फैसल मिस्र से भागकर अरब चला

आया इस समय मिस्री सेना अरब को प्रायः खाली कर चुकी थी। अतः फैसल को वहबी राज्य स्थापित करने में कुछ भी कठिनाई नहीं हुई। ओमन, यमन और हजाज़ वहबी राज्य से अलग बने रहे। बहरिन में ब्रिटिश प्रभाव हो गया। शेष भागों में वहबी शासन हो गया। १८६७ में उसकी मृत्यु हो गई। उत्तरी अरब में मुहम्मद इब्न रशीद प्रबल हो गया था। १८७२ में फैसल के बेटे अब्दुल्ला ने अपने भाई सऊद के विरुद्ध सहायता मांगी। मुहम्मद ने सऊद को भगा कर अब्दुल्ला को गद्दी पर बिठा दिया। १८७४ में अब्दुल्ला को फिर भागना पड़ा। इस बार उसने बगदाद के तुर्की सूबेदार से सहायता मांगी। अँग्रेजों को मना करने पर भी तुर्की सूबेदार मिधत पाशा ने १८७५ में हसा पर अधिकार कर लिया। उसने नज़्द का नया सूबा बनाया और अब्दुल्ला को इसका सूबेदार बनाया। इस समय रूस और तुर्की की लड़ाई हो रही थी। इसलिये तुर्की ने अरब की ओर अधिक ध्यान न दिया। कुछ वर्ष बाद तुर्की ने जब बहरिन द्वीप लेने का प्रयत्न किया तो ब्रिटिश गन बोट ने रोक दिया। मध्य अरब में अराजकता छा

गई। दोनों वहबी भाई आपस में लड़ रहे थे। हैल का शासक उत्तर की ओर से बढ़ रहा था। १८९१ में उत्तरी और दक्षिणी सेनाओं में घमासान लड़ाई हुई। मुतैर और अतैबा ने वहबी लोगों का साथ दिया। वहबी लोग हारे। उनके राज्य का अन्त हो गया। कुछ लोगों ने भागकर कुवैत, बहरिन और फारस की खाड़ी के दूसरे स्थानों में शरण ली। १९०१ में वहबी सरदार युवराज अब्दुल अजीज़ इब्न सऊद ने फिर वहबी राज्य की जड़ जमाने का प्रयत्न किया। १९०३ में ब्रिटिश सरकार ने कुवैत पर अपना प्रभुत्व जमाया। इसी बीच में अब्दुल अज़ीज़ इब्न सऊद ने रात्रि में कुछ साथियों को लेकर रियादह में प्रवेश किया और सूबेदार को मार डाला। इस प्रकार वह भीतरी भाग में अमीर हो गया। १९०४ में उसने क़सीम प्रान्त पर अधिकार कर लिया। बुरैदिया की लड़ाई के बाद तुर्की सेना मध्य अरब से चली गई। १९०६ में वहबी सेना ने रौधातुल मुहन्ना की लड़ाई में उत्तरी सेनाओं को हराया। १९०६ से १९०८ तक हैल में अराजकता छाई रही। फिर अब्दुल अज़ीज इब्न सऊद का बेटा अमीर हुआ। १९२० में वह मार

डाला गया। १६२१ में इब्न सऊद ने हैल को जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार उत्तरी राज्य का अंत हो गया।

१६१४ की बड़ी लड़ाई में इब्न सऊद ने ब्रिटिश सरकार के साथ मित्रता की संधि कर ली। हजाज़ में मक्का के अमीर शरीफ हुसेन इब्न अली ने तुर्कों के विरुद्ध विद्रोह किया और अँग्रेज़ों का साथ दिया। पर जब हुसेन ने (अरबी) शाह की उपाधि ली तब उससे सऊद से अनबन हो गई। बड़ी लड़ाई में ब्रिटिश सरकार ने किसी प्रकार दोनों को आपस में लड़ने से रोका। हजाज और नजद की सीमा के पास स्थित खुरमा गांव को इब्न सऊद लेना चाहता था। हुसेन ने अँग्रेज़ों से सहायता मांगी। लार्ड कर्ज़न ने हुसेन के पक्ष में फैसला दिया और धमकी दी कि फैसला न मानने पर उसे ब्रिटिश सरकार से लड़ना पड़ेगा और ब्रिटिश सरकार ६०,००० पौंड (६ लाख रुपये) की वार्षिक सहायता रोक देगी। वहबी सेना ने शाह हुसेन की एक सेना को रात में छापा मार कर एकदम नष्ट कर दिया। सबन सऊद ने तुराबा को मिला लिया। इसके बाद वह रियादह को

लौट गया। १६२० में सऊद ने अमीर और उसकी राजधानी इबंह पर अधिकार कर लिया। १६२१ में हैल, खैबर और तैमा पर उसका अधिकार हो गया। १६२२ में जौफ पर इब्न सऊद का अधिकार हो गया। इस प्रकार समस्त भीतरी अरब पर इब्न सऊद का अधिकार हो गया। उसका राज्य ओमन से लेकर यमन तक फैल गया। ब्रिटिश सरकार ने हजाज के शाह फैसल और उसके भाई अब्दुल्ला को ट्रान्स जार्डन और इराक की गद्दी पर बैठाया। फिर भी वहबी लोगों से समझौता न हो सका। १६२४ में वहबी लोगों ने तैफ को लूटा और उस पर अधिकार कर लिया। इसी वर्ष उन्होंने मक्का पर अधिकार कर लिया। १६२५ में उन्होंने जद्दा और मक्का ले लिया। १६२६ के जनवरी मास में इब्न सऊद हजाज का राजा घोषित किया गया। इसके बाद ब्रिटिश सरकार की सहायता से ट्रान्स जार्डन और इराक की सीमायें निश्चित की गईं।

मक्का न केवल हजाज वरन् इस्लामी दुनिया का सब से अधिक प्रसिद्ध शहर है। हज़रत मुहम्मद यहीं पैदा हुये थे। यहीं उन्होंने इस्लाम धर्म का प्रचार

आरम्भ किया था। यहीं मक्का में उन्होंने अपने अनुयाइयों को इकट्ठा करके मूर्ति की पूजा करने वालों पर आक्रमण किया था। यह इस्लाम धर्म का प्रधान केन्द्र हो गया। प्रति वर्ष दुनिया के हज़ारों मुसलमान यहां हज करने आते हैं। इस्लाम के पहले भी मक्का और तैफ में धार्मिक उत्सव हुआ करते थे। मक्का शहर लालसागर के पूर्वी किनारे से प्रायः ४५ मील भीतर की ओर है। मक्का शहर एक तंग और बलुई घाटी में स्थित है। इस घाटी की चौड़ाई १०० कदम से ७०० कदम तक है। जहां घाटी सब से अधिक चौड़ी है वहीं पर मक्का शहर बसा है। शहर दोनों ओर से एकदम उजाड़ और वृक्षहीन पहाड़ियों से घिरा है। इन पहाड़ियों की उंचाई २०० फुट से ५०० फुट तक है। प्रधान पहाड़ी शहर से पूर्व की ओर है। घाटी दक्षिण की ओर क्रमशः ढालू हो गई है। शहर का प्रधान भाग घाटी में बसा है। कुछ भाग पहाड़ी ढालों पर बसे हैं। पूर्वी पहाड़ी के ढाल पर प्राचीन नगर बसा था। मक्का की सड़कें अरब के दूसरे शहरों की अपेक्षा अधिक चौड़ी हैं। घर पत्थर

के बने हैं। मुसलमानी घरों में खिड़कियां प्रायः कम होती हैं। लेकिन मक्का के घरों में यात्रियों की सुविधा के लिये काफी खिड़कियां हैं। इनसे सड़कों का पूरा दृश्य दिखाई देता है। लेकिन यहां वृत्तों और बगीचों का एकदम अभाव है। घाटी के चौड़े भाग में बैतुल्ला (देवालय) या बड़ी मस्जिद है। इसी में काबा है। काबा २५० कदम लम्बे और २०० कदम चौड़े चबूतरे पर बना है। इसकी भुजायें सीधी नहीं हैं। इसके दोनों ओर खम्भों की पंक्तियां हैं। इनके ऊपर गुम्बदों की संख्या १५२ है। महराबों के बीच से लैम्प (दीवे) लटके हुये हैं। रमज़ान की रातों में सब दीवे जलाये जाते हैं। साधारणतया कुछ दीवे ही जलाये जाते हैं। कुछ मीनार, दीवारें और महराब लाल, पीली और नीली धारियों से रंगे हैं। काबा मस्जिद बनने के पहले ही स्थित था। मस्जिद इसके चारों ओर बनी। समय समय पर मस्जिद में वृद्धि होती रही। यह १८ कदम लम्बा, १४ कदम चौड़ा और ३५ से ४० फुट तक ऊंचा है। यह २ फुट ऊंचे फर्श पर बना है। इसकी छत चपटी है। इसमें प्रवेश करने के लिये केवल एक द्वार

उत्तर की ओर है। यह वर्ष में केवल दो तीन बार खुलता है। वर्तमान द्वार चांदी से मढ़ा है। इसमें सुनहली सजावट है। चौकठ के पास प्रत्येक रात्रि को दो मोमबत्तियां जला दी जाती हैं। पास ही मुश्क आदि सुगन्धित वस्तुओं से भरे हुये दो वर्तन रख दिये जाते हैं। द्वार के पास उत्तरी पूर्वी कोने पर प्रसिद्ध काला पत्थर है। यह विषम अंडाकार है। इसका व्यास ७ इंच है। भूमि से यह चार पांच फुट ऊंचा है। इसमें सीमेण्ट से कई पत्थर जोड़ दिये गये हैं। यह बहुत ही चिकना है। इसे करोड़ों हाथों ने छुआ है। सम्भव है सदियों से यात्रियों के लगातार छूने से ही यह चिकना हो गया हो। सभी हाजी इसे छूते और चूमते हैं। यह लावा का बना हुआ मालूम होता है। उत्तर की ओर द्वार और दीवार के पास संगमरमर से जड़ी हुई एक छोटी गुफा सी है। मुसलमानों का विश्वास है कि यहां नमाज पढ़ने से विशेष पुण्य होता है। यहां केवल तीन मनुष्य बैठ सकते हैं। कहते हैं यहीं इब्राहीम और उसके बेटे इस्माइल ने काबा बनाने के लिये खड़िया और चिकनी मिट्टी को गूंदा था। काबा के

चारों ओर काला रेशम लटकता रहता है। छत खुली है। हज के समय प्रतिवर्ष यह बदल दिया जाता है। काला पत्थर खुला रहता है। हवा चलने पर परदे उड़ने लगते हैं। इसे देखकर हाजी लोग बहुत प्रसन्न होते हैं। उनका विश्वास है कि ईश्वर के फरिश्ते (दूत) अपने परों से इसे उड़ाते हैं। उनके विश्वास के अनुसार ७०,००० फरिश्ते इस काबा की रक्षा करते हैं और कयामत का अन्तिम बाजा बजते ही फरिश्ते काबा को स्वर्ग में ढो ले जायंगे।

मदीना या अल् मदीना का अर्थ नगर या शहर है। यह एक पुरानी टूटी फूटी चारदीवारी से घिरा है। इस चारदीवारी के भीतर प्रवेश करने के लिये एक ऊंचा आयताकार दरवाजा है। दरवाजे तक पहुंचने के लिये खजूरों से घिरे हुये मैदान में होकर एक टेढ़ा रास्ता गया है। दरवाजे के उत्तर की ओर हाल की बनी तुर्की इमारत के गुम्बद और मीनारें हैं। दाहिनी ओर भद्दी खिड़की वाले नीचे सफेद घर हैं। बाहर की ओर खजूरों के बीच में एक पुराने फव्वारे के खंडहर हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर ऊंचा और सफेदी से पुता हुआ

किला है। यह एक चट्टान पर बना है। इसकी दीवारें योरुपीय ढंग की मालूम होती हैं। एक भाग (मुनखाह) की पांच मस्जिदों के गुम्बद और मीनारें दूर से दिखाई देती हैं। पर चार बुर्जों से घिरा हुआ नीला गुम्बद सर्व प्रसिद्ध है। इसी के नीचे हजरत मुहम्मद की क़ब्र है। घरों से कुछ छिपे हुये यहां (अलबकया के कब्रिस्तान में) और भी कई मकबरे हैं। दक्षिण की ओर लावा की शिलाओं के ऊपर खजूरों का झुंड है।

हज

जद्दा हाजियों का सबसे बड़ा बन्दरगाह है। यहां मध्य एशिया, हिन्दुस्तान, बरमा, चीन, जावा और अफ्रीका के हाजी आते हैं। मरक्को, मिस्र, पेलेस्टाइन और सिरिया से आनेवाले हाजी उत्तर में याम्बू में उतरते हैं। इराक और ईरान से आने वाले कुछ यात्री सीधे ट्रान्स जार्डन के रेगिस्तान को पार करते हैं। कुछ हाजी अकेले आते हैं। कुछ परिवार के साथ आते हैं। जद्दा से कारवां चलता है। कुछ लारियों पर और कुछ चटाई से छाई हुई ऊंट गाड़ियों पर सफर करते

हैं। इन पर बड़े धक्के लगते हैं। लेकिन हाजी अल्लाह (ईश्वर) के ९९ नाम जपते रहते हैं या धार्मिक नारे लगाते हैं। कड़ी धूप और गरमी में यहां प्यास बहुत सताती है। ऊंटों और ऊंट गाड़ियों पर आने वाले यात्री शाम के बहरा में ठहर जाते हैं जो मक्का के मार्ग के मध्य में पड़ता है। यहां घर नहीं बने हैं। ऊंट के बालों के बने हुए केवल कुछ डेरे लगे रहते हैं। यहां लोग खुले मैदान में लकड़ी या कोयले से भोजन पकाते हैं। साथ लाये हुये मशक का पानी पीते हैं। कुछ लोग क़ुरान पढ़ते हैं और कुछ नमाज़ पढ़ते हैं।

कुछ लोग आधी रात को नमाज़ पढ़ते हैं। कुछ माला फेरते हैं। सवेरा होते ही लोग फिर नमाज़ पढ़ते हैं और ऊंटों को लादकर प्रस्थान कर देते हैं। धूप में नंगी पहाड़ियां चमकने लगती हैं। घाटी का मार्ग बहुत ही टेढ़ा है। जब मक्का तीन मील रह जाता है। तब पत्थर के दो खम्भे मिलते हैं। यहां से आगे कोई काफिर (गैर मुसलमान) मक्का की ओर बढ़ने का साहस नहीं कर सकता है। मक्का में दीनदार मुसलमान विधर्मी को देखना पसन्द नहीं करते हैं।

मक्का में प्रवेश करने के लिये पहले तीन द्वार थे। इस समय द्वार नहीं हैं पर इधर आने वाली सड़कें इन्हीं नामों से प्रसिद्ध हैं। उत्तरी द्वार बाबुल मोअल्ला (सम्मान का द्वार) कहलाता है। यहीं होकर नजद के यात्री आते हैं। कुछ यात्री मदीना की ओर से भी आते हैं। दक्षिणी द्वार से असीर और यमन को मार्ग गया है। इस मार्ग की घाटी दक्षिणी मैदान को जाती है। बाबुल ओमर हरम या काबा की बड़ी मस्जिद के पास है। जद्दा से आनेवाले यात्री इसी द्वार से मक्का में प्रवेश करते हैं। इनकी संख्या सबसे अधिक होती है। मक्का के पूर्व और पश्चिम की ओर कुछ ऊंची पहाड़ियां हैं। मक्का शहर दो मील से कुछ ही अधिक लम्बा है। बाबुल ओमरा के आगे खेत हैं। हरम या विशाल मस्जिद शहर के बीच में है। इसके मार्ग में कई मंज़िला ऊंचे घर पहाड़ के ढाल पर बने हैं। बीच की सड़क बड़ी चौड़ी है। इसके दोनों ओर अरबी दुकानें हैं। मस्जिद का हाता २५० कदम लम्बा और २०० कदम चौड़ा है। इसमें १९ दरवाज़े हैं। इनके बीच में काले पत्थर का काबा है। छत के ऊपर

ऊंची मीनारें हैं जिनमें ऊपर से दिन भर में पांच बार अजान दी जाती है। जमजम (कूप) का पानी कुछ खारा है लेकिन यह बहुत ठंडा रहता है। हज़ारों यात्री इसके पानी को पीते हैं। कुछ लोग अपने कोरे कपड़े को इसके पानी में धोते हैं और पड़ोस में सुखाते हैं। इसे वे अपने कफन के लिये ले जाते हैं। उनका विश्वास है कि कयामत के दिन यह कफन उनको नरक की विकराल गरमी से बचायेगा।

बहुत से यात्री डब्बों में भर कर इस जल को घर ले आते हैं। उनका विश्वास है कि इस जल को पीने से कई प्रकार की बीमारियां दूर हो जाती हैं। मक्का में पहुँचते ही यात्री काबा की परिक्रमा करता है और काले पत्थर को चमका कर नमाज़ पढ़ता है। इसके बाद वह रुफा मर्वा को जाता है और सात बार दौड़ कर या तेज़ चल कर सई की रस्म पूरी करता है। कहते हैं पानी की खोज में हाजरा भी दौड़ी थी। अतः दौड़ने से यात्री का हाजरा से सम्बन्ध जुड़ जाता है। इसके बाद वह मुंडन कराता है। फिर वह भोजन करता है और विश्राम करता है। काबा प्रायः ४० फुट लम्बा चौड़ा

और ऊंचा है। छत एक ओर ढलवां है। इसी ओर वर्षा जल गिराने के लिये चांदी की टोंटी लगी है। अल्लाह के घर की छत से गिरा हुआ पानी बड़ा पवित्र माना जाता है। दीनदार मुसलमान इसे बड़े प्रेम से इकट्ठा करते हैं। काबा का दर्शन करने के लिये यहां दिन रात यात्रियों की भीड़ लगी रहती है। काबा काले रेशम किस्वा से ढका रहता है। छत से कुछ नीचे इसमें सोने के तार से कुरान की आयतें बुनी रहती हैं। प्रतिवर्ष यह रेशम बदला जाता है। इसे मिश्र देश की कुमारी लड़कियाँ बुनती हैं। बहुत से यात्री काबा की परिक्रमा करते हैं जिसे तवाफ कहते हैं। यात्री यहां विशेष प्रकार की पोशाक पहनते हैं। हज की कुछ रस्में मक्का शहर के बाहर अराफात के मैदान में पूरी की जाती है। यात्री दोपहर को मक्का से प्रस्थान करते हैं। तीन घंटे के बाद वे मीना गांव में पहुंचते हैं। कुछ लोग रात्रि को यहीं विश्राम करते हैं। आगे मार्ग में मुज़्दफा की मस्जिद पड़ती है। इसके आगे एक पहाड़ी के पास अराफ़ात का मैदान है। यहां वह लुब्बैक का पाठ पढ़ता है।

मगरिब या सन्ध्या की नमाज़ के बाद वह मुज़-दलीफा को मस्जिद को जाता है। दूसरे दिन सबेरा होते ही वह अराफात के मैदान में पहुँचता है। यहां लुब्बैक पढ़ने के बाद यात्री फिर मीना गांव को जाता है। यहां वह पत्थर के छोटे छोटे सात टुकड़े हाथ में लेकर शैतान के ऊपर फेंकता है। इसके बाद वह ऊंट या बकरे की बलि चढ़ाता है और उसका कुछ मांस स्वयं खाता है। इसके बाद वह सिर मुंडाता है और इह्राम को उतार कर साधारण वस्त्र पहिन लेता है। मक्का में मीठे पानी का केवल एक कुआं है। यहां साधारणतः ५०,००० यात्री आते हैं इसलिये एक बाल्टी पानी अक्सर १) रु० को बिकता है। कभी कभी १ लाख यात्री आ जाते हैं और पीने का पानी जद्दा बन्दरगाह से आता है। मक्का एकदम उजाड़ है। यहां कोई चीज नहीं उगती है। भोजन का सभी सामान जद्दा बन्दरगाह से आता है। हज के दिनों में घरों का किराया भी बढ़ जाता है। एक कमरे का साधारण किराया ४०) रु० होता है। कभी कभी चार पांच सौ रुपया हो जाता है। दिन के समय इतनी गरमी होती है कि यात्री घरों को

छोड़ने का साहस नहीं करता है। सन्ध्या के समय गरमी कम होने पर वह रेशम माला और दूसरा सामान मोल लेने के लिये निकलता है। हज के समय कभी कभी वहबी वीर राजा इब्न सऊद भी प्रार्थना में सम्मिलित होता है।

इब्न सऊद

इब्न सऊद या अब्दुल अज़ीज़ इब्न अब्दुल रहमान इब्न फैसल इब्न सऊद नजद की राजधानी रियादह नगर में १८८० ई० में पैदा हुआ था। उसका पिता अब्दुल रहमान (जो १९२८ में मर गया) नजद के सुल्तान अमीर फैसल के चार लड़कों में सब से छोटा लड़का था। अमीर फैसल ने १८३५ से १८६७ तक शासन किया। उसके मरने पर मध्य अरब में गड़बड़ी और गृहकलह फैल गई। गद्दी के लिये उसके दो बड़े लड़के अब्दुल्ला और सऊद आपस में लड़ने लगे। १८-७५ में तुर्कों ने हासा पर अधिकार कर लिया। उत्तरी नजद से इब्न रशीद प्रतिद्वन्द्वी के वेश में दक्षिण की ओर अपना राज्य फैला रहा था। अन्त में अमीर मुहम्मद ने रियादह को छीन कर वहबी राज्य ही समाप्त कर दिया। अब्दुल अज़ीज़ देश से बाहर निकल गया। कुछ समय बहरिन में रहने के बाद वह कुवैत आया। यहां उसे शेख मुहम्मद ने ब्रिटेन से मित्रता रखने और आगे बढ़ने की सलाह दी। अब्दुल रहमान ने १६०० ई० में वहबी राज्य को फिर से लेने की कोशिश की। शरीफ में

उसकी हार होने पर उसने अपने सब अधिकार अपने बड़े लड़के अब्दुल अज़ीज़ को सौंप दिये। १६०१ में



अरब के इब्नसऊद।

२०० सिपाहियों के साथ अब्दुल अज़ीज़ रेगिस्तान में बढ़ा।

जब राजधानी कुछ ही दूर रह गई तब उसने २०० में से १५ मनुष्यों को चुना रात में वह इन साथियों को लेकर रियादह (राजधानी) में पहुँचा और किले के सामने वाले घर में घुस गया। किले में रशीदी हाकिम रहता था। रात में जो भीषण लड़ाई हुई उसमें इब्न सऊद की जीत हुई। इस प्रकार इब्न सऊद रियादह का मालिक बन गया और नजद का राजा घोषित कर दिया गया। कुछ वर्षों में इब्न सऊद ने अपने पड़ोस वाले प्रान्तों पर अधिकार कर लिया और इब्न रशीद का मुक़ाबिला करने लगा। इब्न रशीद को तुर्कों से सहायता मिलती थी। १६०६ में इब्न रशीद मर गया। इससे इब्न सऊद को उत्तर की ओर से कोई खटका न रहा।

बाहरी हमलों से मुक्त होने पर इब्न सऊद ने भीतरी सुधार की ओर अपना सारा ध्यान लगाया। अलग अलग फिरकों को मिला कर उसने १६१२ में एक कौम बनाने की कोशिश की। जहाँ पहले १०० रहने वाले थे, वहीं अरतावियामें १०,००० मनुष्यों की अच्छी बस्ती बस गई। इसी तरह पिछले २० वर्ष में कई जगह बस्तियां बढ़ गईं। घुमक्कड़ चरवाही की जगह पर खेती होने

लगी। बद्दू रस्म की जगह शरह या धर्म ग्रन्थ के अनु-सार काम होने लगा। हर एक बस्ती में कुछ न कुछ वहबी स्थायी सेना तैयार हो गई। यह सेना भीतरी शान्ति रखने और बाहरी हमलों को रोकने के काम आती है। १९१३ में वहबी फौज ने अचानक हफूफ पर छापा मारा। तुर्क लोग १८७५ से हासा में राज्य करते थे। इब्न सऊद की फौज इस प्रकार अचानक हफूफ में पहुँची कि तुर्की फौज से कुछ भी करते न बन पड़ा। बिना लड़े ही हफूफ पर इब्न सऊद का अधिकार हो गया। इसी तरह उकैर और कातिफ में इब्न सऊद का अधिकार हो गया और तुर्क लोगों ने पूर्वी अरब को छोड़ दिया।

१९१४ के अन्त में ब्रिटिश कैप्टेन शेक्सपियर तुर्कों के विरुद्ध सहायता लेने के लिये इब्न सऊद से मिलने गया। इब्न सऊद का पुराना दुश्मन इब्न रशीद तुर्कों से मिल गया था। इब्न सऊद ने एकदम फौज इकट्ठी की। जराब में लड़ाई हुई। लेकिन कैप्टेन शेक्सपियर मारा गया। इसलिये अँग्रेज़ों ने भीतरी अरब में बहुत छेड़खानी न की। १९१५ में इब्न सऊद ने अँग्रेज़ों से

मित्रता सम्बन्धी सन्धि कर ली। लेकिन जब लारेंस की सहायता से राजा (शाह) हुसेने हजाज़ में बलवान होने लगा तब इब्न सऊद को चिन्ता होने लगी। १६१७ में ब्रिटिश मिशन फिर इब्न सऊद के दरबार में गया। १६१८ में इब्न सऊद ने इब्न रशीद पर चढ़ाई की। वह हैल की दीवारों के पास तक पहुँच गया। इसी बीच में बड़ी लड़ाई समाप्त हो गई। इसलिये इब्न सऊद की स्थिति में कोई अन्तर न पड़ा। बड़ी लड़ाई के पहले जो दो दुश्मन (इब्न रशीद और शाह हुसेन) थे वे ही बाद में भी बने रहे। १६१६ में ब्रिटिश सरदार की ओर से लार्ड कर्ज़न ने शाह हुसेन की तरफदारी की। ब्रिटिश सरकार ने शाह हुसेन को खुरमा पर अधिकार करने और इब्न सऊद को वहाँ दूर रहने की आज्ञा दी। लेकिन इब्न सऊद ने इनकी परवाह न की। दो महीने बाद वहवी फौज़ों ने हश्मी फौज़ों को तुरावा के पास छापा मार कर नष्ट कर दिया। इसके बाद इब्न सऊद रियादह को लौट गया। १६२० में इब्न सऊद की वहवी फौजों ने असीर जीत लिया। १६२१ में हैल को जीतने से सारा मध्य अरब इब्न सऊद के हाथों में आ गया।

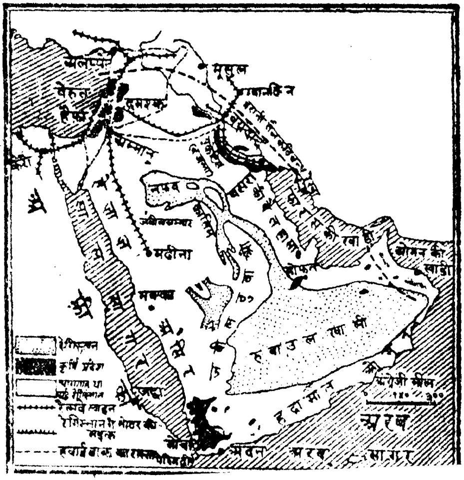
१९२१ में वहबी लोगों ने जौफ पर अपना अधिकार जमाया।

ब्रिटिश सरकार ने देर से दोनों के बीच में मध्यस्थ बनने की कोशिश की। अप्रैल १९२४ तक इसका कोई फल न हुआ। इसी समय वहबी लोगों ने हजाज़ पर चढ़ाई की और तैफ पर छापा मार कर उसे जीत लिया। वहां के निवासी मार डाले गये। शाह हुसेन को अपने बड़े लड़के अली के पक्ष में गद्दी छोड़नी पड़ी। अली ने शीघ्र ही मक्का खाली कर दिया। वहां वहबी लोगों का अधिकार हो गया। १९२५ में इब्न सऊद ने पहली बार मक्का में प्रवेश किया। कुछ महीनों में मदीना, जद्दा और दूसरे जिलों पर भी वहबी लोगों का अधिकार हो गया। १९२६ में मक्का की बड़ी मस्जिद में इब्न सऊद जहाज का शाह घोषित किया गया। नजद और दूसरे भागों का सुल्तान वह पहले ही था।

१९२७ में ब्रिटेन से फिर मित्रता सम्बन्धी सन्धि हुई। लेकिन जब इराक के राजा ने अरब की सीमा के पास किले बनवाये तो दोनों में खपपट हो गई। इब्न

सऊद की एक फौजी टोली ने किला बनाने वालों को मार डाला।

इब्न सऊद को नजद में राज्य करते लगभग ३५ वर्ष और हजाज़ में १० वर्ष हो गये हैं। जहां पहले अराजकता थी वहां अरब में इब्न सऊद ने अमन कर दिया है। हज करने वालों के लिये मोटर मार्ग की सुविधा हो गई है। राज्य की आमदनी बढ़ गई है। साथ ही रिश्वत खोरी कम हो गई है। उसका सब से बड़ा लड़का लगभग ३२ वर्ष का है और नजद का सूबेदार है। दूसरा लड़का कई बार योरुप हो आया है। वह मक्का का सूबेदार है। इन दो के अतिरिक्त इब्न सऊद के ११ लड़के और हैं। इब्न सऊद ने १५० शादियाँ की हैं। कई स्त्रियों को पीछे से तलाक भी दे दी। कुछ शादियां राजनैतिक कारणों से की गईं। फिर भी हजरत मुहम्मद के आरम्भ के अनुयाइयों के बाद इब्न सऊद ने सब से अधिक शक्तिशाली राज्य अरब में स्थापित कर दिया है।



मूसल
मदीना
बसरा
ओमन की खाड़ी
कृषि प्रदेश
अरब सागर

'भूगोल' का स्थायी साहित्य